03-09-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

“मीठे बच्चे - सत्य पण्डा आया है तुम्हें सच्ची-सच्ची यात्रा सिखलाने, तुम्हारी यात्रा में मुख्य है पवित्रता, याद करो और पवित्र बनो"

प्रश्नः- तुम मैसेन्जर वा पैगम्बर के बच्चों को किस एक बात के सिवाए और किसी भी बात में आरग्यु नहीं करनी है?

उत्तर:- तुम मैसेन्जर के बच्चे सबको यही मैसेज दो कि अपने को आत्मा समझो और बाप को याद करो तो इस योग अग्नि से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। यही ओना रखो, बाकी और बातों में जाने से कोई फायदा नहीं। तुम्हें सिर्फ सभी को बाप का परिचय देना है, जिससे वह आस्तिक बनें। जब रचता बाप को समझ लेंगे तो रचना को समझना सहज हो जायेगा।

गीत:- हमारे तीर्थ न्यारे हैं....... Click

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चे जानते हैं कि

03-09-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

हम सत्य तीर्थवासी हैं। सच्चा पण्डा और हम उनके बच्चे जो हैं वह भी सच्चे तीर्थ पर जा रहे हैं। यह है झूठ खण्ड अथवा पतित खण्ड। अभी सचखण्ड वा पावन खण्ड में जा रहे हैं। मनुष्य यात्रा पर जाते हैं ना। कोई-कोई खास यात्रायें लगती हैं, जहाँ पर कोई कभी भी जा सकते हैं।

यह भी यात्रा है, इसमें जाना तब होता है जब सत्य पण्डा खुद आये। वह आता है कल्प-कल्प के संगम पर। इसमें न ठण्डी, न गर्मी की बात है। न धक्के खाने की बात है। यह तो है याद की यात्रा।

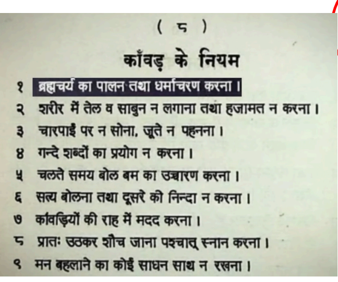

(८)

कॉंवड़ के नियम

१ ब्रह्मचर्य का पालन तथा धर्माचरण करना।
२ शरीर में तेल व साबुन न लगाना तथा हजामत न करना।
३ चारपाई पर न सोना, जूते न पहनना।
४ गन्दे शब्दों का प्रयोग न करना।
५ चलते समय बोल बम का उच्चारण करना।
६ सत्य बोलना तथा दूसरे की निन्दा न करना।
७ कांवड़ियों की राह में मदद करना।
८ प्रातः उठकर शौच जाना पश्चात् स्नान करना।
९ मन बहलाने का कोई साधन साथ न रखना।

उन यात्राओं में संन्यासी भी जाते हैं। सच्ची-सच्ची यात्रा करने वाले जो होते हैं वह पवित्र रहते हैं। तुम्हारे में सभी यात्रा पर हैं। तुम ब्राह्मण हो। सच्चे-सच्चे ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ कौन हैं? जो कभी भी विकार में नहीं जाते हैं। पुरुषार्थी तो जरूर हैं।

Now It is Also Dangerous →

मन्सा संकल्प भल आयें, मुख्य है ही विकार की बात। कोई पूछे निर्विकारी ब्राह्मण कितने हैं आपके पास? बोलो, यह पूछने की जरूरत नहीं है। इन बातों से आपका क्या पेट भरेगा। तुम यात्री बनो। यात्रा करने वाले कितने हैं, इस पूछने से कोई

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

फायदा नहीं है। ब्राह्मण तो कोई सच्चे भी हैं, तो झूठे भी हैं। आज सच्चे हैं, कल झूठे बन जाते हैं। Be Alert...! विकार में गया तो ब्राह्मण नहीं ठहरा। फिर शूद्र का शूद्र हो गया। आज प्रतिज्ञा करते कल विकार में गिर असुर बन जाते हैं। अब यह बातें कहाँ तक बैठ समझायें। इनसे पेट तो नहीं भरेगा वा मुख मीठा नहीं होगा। यहाँ हम बाप को याद करते हैं और बाप की रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानते हैं। बाकी और बातों में कुछ रखा नहीं है। बोलो, यहाँ बाप की याद सिखाई जाती है और पवित्रता है मुख्य। जो आज पवित्र बन फिर अपवित्र बन जाते हैं, तो वह ब्राह्मण ही नहीं रहा। वह हिसाब कहाँ तक बैठ तुमको सुनायेंगे। ऐसे तो बहुत गिरते होंगे माया के तूफानों में, इसलिए ब्राह्मणों की माला नहीं बन सकती है। हम तो पैगम्बर के बच्चे पैगाम सुनाते हैं, मैसेन्जर के बच्चे मैसेज देते हैं। अपने को आत्मा समझ और बाप को याद करो तो इस योग अग्नि से विकर्म विनाश होंगे। यह ओना रखो। बाकी प्रश्न तो ढेर के ढेर मनुष्य पूछेंगे। सिवाए एक बात के और कोई बातों मे जाने से

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

कोई फायदा ही नहीं। यहाँ तो यह जानने का है कि नास्तिक से आस्तिक, निधनके से धन के कैसे बनें, जो धनी से वर्सा पायें - यह पूछो। बाकी तो सब पुरुषार्थी हैं। विकार की बात में ही बहुत फेल होते हैं। बहुत दिनों के बाद स्त्री को देखते हैं तो बात मत पूछो। कोई को शराब की आदत होती है, तीर्थों पर जायेंगे तो शराब अथवा बीड़ी की जिनको आदत होगी वह उसके बिगर रह नहीं सकेंगे। छिपाकर भी पीते हैं। कर ही क्या सकते। बहुत हैं जो सच नहीं बोलते हैं। छिपाते रहते हैं।

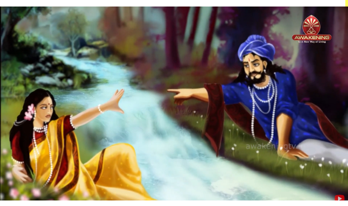

बाबा बच्चों को युक्तियाँ बतलाते हैं कि कैसे युक्ति से जवाब देना चाहिए। एक बाप का ही परिचय देना है, जिससे मनुष्य आस्तिक बनें। पहले जब तक बाप को नहीं जाना है तब तक कोई प्रश्न पूछना ही फालतू है। ऐसे बहुत आते हैं, समझते कुछ भी नहीं। सिर्फ सुनते रहते, फायदा कुछ भी नहीं। बाबा को लिखते हैं हज़ार दो हज़ार आये, उनसे दो-एक समझने लिए आते रहते हैं। फलाना-फलाना बड़ा आदमी आता रहता है, हम समझ

जाते हैं, उनको जो परिचय मिलना चाहिए वह मिला नहीं है। पूरा परिचय मिले तो समझें यह तो ठीक कहते हैं, हम आत्माओं का बाप परमपिता परमात्मा है, वह पढ़ाते हैं। कहते हैं अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो। यह अन्तिम जन्म पवित्र बनो। जो पवित्र नहीं रहते वह ब्राह्मण नहीं, शूद्र हैं। लड़ाई का मैदान है। झाड़ बढ़ता रहेगा और तूफान भी लगेंगे। बहुत पत्ते गिरते रहेंगे। कौन बैठ गिनती करेंगे कि सच्चे ब्राह्मण कौन हैं? सच्चे वह जो कभी शूद्र न बनें। ज़रा भी दृष्टि न जाए। अन्त में कर्मातीत अवस्था होती है। बड़ी ऊंची मंजिल है। मन्सा में भी न आये, वह अवस्था अन्त में होनी है। इस समय एक की भी ऐसी अवस्था नहीं है। इस समय सब पुरुषार्थी हैं। नीचे-ऊपर होते रहते हैं। मुख्य आंखों की ही बात है। हम आत्मा हैं, इस शरीर द्वारा पार्ट बजाते हैं - यह पक्का अभ्यास चाहिए। जब तक रावण राज्य है, तब तक युद्ध चलता रहेगा। पिछाड़ी में कर्मातीत अवस्था होगी। आगे चलकर तुमको फीलिंग आयेगी, समझते जायेंगे। अभी तो झाड़ बहुत

It is a battle field

कुरुक्षेत्र (धर्मक्षेत्र)

छोटा है, तूफान लगता है, पत्ते गिर पड़ते हैं। जो कच्चे हैं वह गिर पड़ते हैं। हर एक अपने से पूछे - मेरी अवस्था कहाँ तक है? बाकी जो प्रश्न पूछते हैं उन बातों में जास्ती जाओ ही नहीं। बोलो, हम बाप की श्रीमत पर चल रहे हैं। वह बेहद का बाप आकर बेहद का सुख देते हैं अथवा नई दुनिया स्थापन करते हैं। वहाँ सुख ही होता है। जहाँ मनुष्य रहते हैं उसको ही दुनिया कहा जाता है। निराकारी वर्ल्ड में आत्मायें हैं ना। यह किसकी बुद्धि में नहीं है कि आत्मा कैसे बिन्दी है। यह भी पहले कोई नये को नहीं समझाना है। पहले-पहले तो समझाना है - बेहद का बाप बेहद का वर्सा देते हैं। भारत पावन था, अभी पतित है। कलियुग के बाद फिर सतयुग आना है। दूसरा कोई भी समझा न सके, सिवाए बी.के. के। यह है नई रचना। बाप पढ़ा रहे हैं - यह समझानी बुद्धि में रहनी चाहिए। कोई डिफीकल्ट बात नहीं है, परन्तु माया भुला देती है, विकर्म करा देती है। आधाकल्प से विकर्म करने की आदत पड़ी हुई है। वह सब आसुरी आदतें मिटानी हैं। बाबा खुद कहते हैं - सब

पूछो अपने आप से...

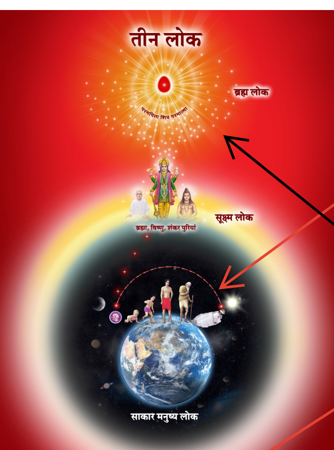

But, we Know it, How Lucky & Great we all are...!

Thoroughly

03-09-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

पुरुषार्थी हैं। कर्मातीत अवस्था को पाने में बहुत टाइम लगता है। ब्राह्मण कभी विकार में नहीं जाते। युद्ध के मैदान में चलते-चलते हार खा लेते हैं। इन प्रश्नों से कोई फायदा नहीं। पहले अपने बाप को याद करो। हमको शिवबाबा ने कल्प पहले मुआफिक फरमान दिया है कि अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो। यह वही लड़ाई है। बाप एक है, श्रीकृष्ण को बाप नहीं कहेंगे। श्रीकृष्ण का नाम डाल दिया है। रांग से राइट बनाने वाला बाप है, तब तो उनको ट्रूथ कहा जाता है ना। इस समय तुम बच्चे ही सारे सृष्टि के राज़ को जानते हो। सतयुग में है डीटी डिनायस्टी। रावण राज्य में फिर है आसुरी डिनायस्टी। संगमयुग क्लीयर कर दिखाना है, यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। उस तरफ देवतायें, इस तरफ असुर। बाकी उन्हों की लड़ाई हुई नहीं है। लड़ाई तुम ब्राह्मणों की है विकारों से, इनको भी लड़ाई नहीं कहेंगे। सबसे बड़ा है काम विकार, यह महाशत्रु है। इन पर जीत पाने से ही तुम जगतजीत बनेंगे। इस विष पर ही अबलायें मार खाती हैं। अनेक प्रकार

गीता का महावाक्य

ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Biggest Enemy – Refer 3rd page From end

के विघ्न पड़ते हैं। मूल बात है पवित्रता की। पुरुषार्थ करते-करते, तूफान आते-आते तुम्हारी जीत हो जायेगी। माया थक जायेगी। कुश्ती में पहलवान जो होते हैं, वह झट सामना कर लेते हैं। उन्हों का धन्धा ही है अच्छी रीति लड़कर जीत पाना। पहलवान का बड़ा नामाचार होता है। इनाम मिलता है। तुम्हारी तो यह है गुप्त बात।

Coming Soon...

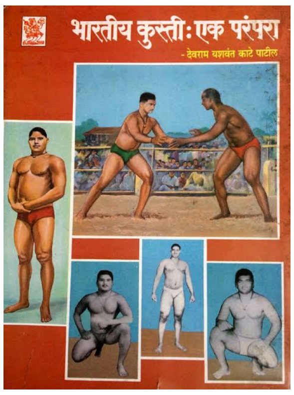

याद करो...

तुम जानते हो हम आत्मायें पवित्र थी। अभी अपवित्र बनी हैं फिर पवित्र बनना है। यही मैसेज सबको देना है और कोई भी प्रश्न पूछे, तुमको इन बातों में जाना ही नहीं है। तुम्हारा है ही रूहानी धन्धा। हम आत्माओं में बाबा ने ज्ञान भरा था, बाद में प्रालब्ध पाई, ज्ञान खत्म हो गया। अब फिर बाबा ज्ञान भर रहे हैं। बाकी नशे में रहो, बोलो बाप का मैसेज देते हैं कि बाप को याद करो तो कल्याण होगा। तुम्हारा धन्धा ही यह रूहानी है। पहली-पहली बात कि बाप को जानों। बाप ही ज्ञान का सागर है। वह कोई पुस्तक थोड़ेही सुनाते हैं। वो लोग जो डॉक्टर ऑफ फिलॉसॉफी आदि

बनते हैं, वह किताब पढ़ते हैं। भगवान तो नॉलेजफुल है। उनको सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज है। वह कुछ पढ़ा है क्या? वह तो सब वेदों-शास्त्रों आदि को जानते हैं। बाप कहते हैं मेरा पार्ट है तुमको नॉलेज समझाने का। ज्ञान और भक्ति का कान्ट्रास्ट और कोई बता न सके। यह है ज्ञान की पढ़ाई। भक्ति को ज्ञान नहीं कहा जाता है। सर्व का सद्गति दाता एक ही बाप है। वर्ल्ड की हिस्ट्री जरूर रिपीट होगी। पुरानी दुनिया के बाद फिर नई दुनिया जरूर आनी है। तुम बच्चे जानते हो बाबा हमको फिर से पढ़ाते हैं। बाप कहते हैं मुझे याद करो, ज़ोर सारा इस पर है। बाबा जानते हैं बहुत अच्छे-अच्छे नामीग्रामी बच्चे इस याद की यात्रा में बहुत कमज़ोर हैं और जो नामीग्रामी नहीं, बांधेलियां हैं, गरीब हैं, वह याद की यात्रा में बहुत रहते हैं। हर एक अपनी दिल से पूछे - मैं बाप को कितना समय याद करता हूँ? बाबा कहते हैं - बच्चे, जितना हो सके तुम मुझे याद करो। अन्दर में बहुत हर्षित रहो। भगवान पढ़ाते हैं तो कितनी खुशी होनी चाहिए। बाप कहते हैं तुम पवित्र आत्मा थे

Exclusive Authority of Shivbaba..

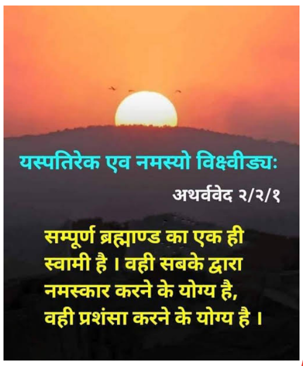

समजा?

पूछो अपने आप से...

याद करो...

फिर शरीर धारण कर पार्ट बजाते-बजाते पतित बने हो। अब फिर पवित्र बनना है। फिर वही दैवी पार्ट बजाना है। तुम दैवी धर्म के हो ना। तुमने ही 84 का चक्र लगाया है। सब सूर्यवंशी भी 84 जन्म थोड़ेही लेते हैं। पीछे आते रहते हैं ना। नहीं तो फट से सभी आ जाएं। सवेरे उठकर बुद्धि से कोई काम ले तो समझ सकते हैं। बच्चों को ही विचार सागर मंथन करना है। शिवबाबा तो नहीं करते हैं। वह तो कहते हैं ड्रामा अनुसार जो कुछ सुनाता हूँ, ऐसे ही समझो कल्प पहले मुआफिक जो समझाया था, वही समझाया। मंथन तुम करते हो। तुमको ही समझाना है, ज्ञान देना है। यह ब्रह्मा भी मंथन करते हैं। बी.के. को मंथन करना है, शिवबाबा को नहीं। मूल बात कोई से भी जास्ती टॉक नहीं करनी है। आरग्यु शास्त्रवादी आपस में बहुत करते हैं, तुमको आरग्यु (वाद-विवाद) नहीं करना है। तुमको सिर्फ पैगाम देना है। पहले सिर्फ मुख्य एक बात पर समझाओ और लिखाओ। पहले-पहले यह सबक़ (पाठ) रखो कि यह कौन पढ़ाते हैं, सो लिखो। यह बात तुम पिछाड़ी में ले जाते हो

हाँ मेरे मीठे बाबा...

Mind it...

That's All

समजा?

इसलिए संशय पड़ता रहता है। निश्चयबुद्धि न होने कारण समझते नहीं हैं। सिर्फ कह देते बात ठीक है। पहले-पहले मुख्य बात ही यह है। रचता बाप को समझो फिर रचना का राज़ समझना। मुख्य बात गीता का भगवान कौन? तुम्हारी विजय भी इनमें होनी है। पहले-पहले कौन सा धर्म स्थापन हुआ? पुरानी दुनिया को नई दुनिया कौन बनाते हैं।

Exclusive Authority of Shivbaba..

बाप ही आत्माओं को नया ज्ञान सुनाते हैं, जिससे नई दुनिया स्थापन होती है। तुमको बाप और रचना की पहचान मिलती है। पहले-पहले तो अल्फ पर पक्का कराओ तो बे बादशाही है ही। बाप से ही वर्सा मिलता है। बाप को जाना और वर्से का हकदार बना। बच्चा जन्म लेता है, माँ-बाप को देखा और बस पक्का हो जायेगा। माँ-बाप के सिवाए कोई के पास जायेगा भी नहीं क्योंकि माँ से दूध मिलता है। यह भी ज्ञान का दूध मिलता है। मात-पिता है ना। यह बड़ी महीन बातें हैं, जल्दी कोई समझ न सकें। अच्छा!

Most imp.

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

03-09-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) सच्चा-सच्चा पवित्र ब्राह्मण बनना है, कभी शूद्र (पतित) बनने का मन्सा में भी ख्याल न आये, जरा भी दृष्टि न जाए, ऐसी अवस्था बनानी है।

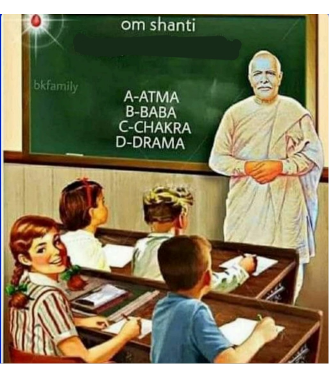

2) बाप जो पढ़ा रहे हैं, वह समझानी बुद्धि में रखनी है। जो विकर्म करने की आसुरी आदतें पड़ी हुई हैं, उन्हें मिटाना है। पुरुषार्थ करते-करते सम्पूर्ण पवित्रता की ऊंची मंजिल को प्राप्त करना है।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Method/Process/Instrument Outcome/Output/Result

03-09-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- कारण का निवारण कर चिंता और भय से मुक्त रहने वाले मा. सर्वशक्तिमान भव

Finale Achievement

वर्तमान समय अल्पकाल के सुख के साथ चिंता और भय यह दो चीजें तो हैं ही।

ये पक्का समझ लो

जहाँ चिंता है वहाँ चैन नहीं हो सकता। जहाँ भय है वहाँ शान्ति नहीं हो सकती। तो सुख के साथ यह दुख अशान्ति के कारण भी हैं ही।

Great Swamaan

लेकिन आप सर्व शक्तियों के खजाने से सम्पन्न मास्टर सर्वशक्तिमान बच्चे दुखों के कारण का निवारण करने वाले, हर समस्या का समाधान करने वाले समाधान स्वरूप हो इसलिए चिंता और भय से मुक्त हो।

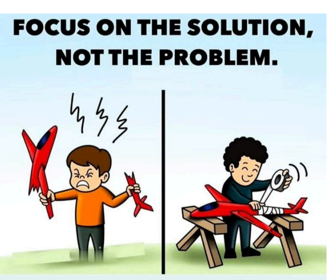

कोई भी समस्या आपके सामने खेल करने आती है न कि डराने।

स्लोगन:- अपनी वृत्ति को श्रेष्ठ बनाओ तो आपकी प्रवृत्ति स्वत: श्रेष्ठ हो जायेगी।

Automatically

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

03-09-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

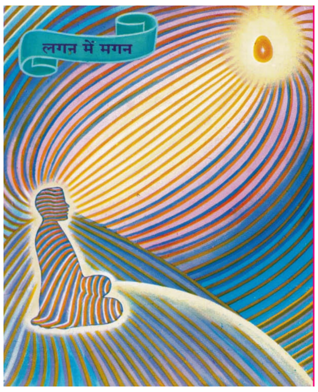

अव्यक्त इशारे -

अब लगन की अग्नि को प्रज्वलित कर

योग को ज्वाला रूप बनाओ

समय प्रमाण अब सर्व ब्राह्मण आत्माओं को समीप लाते हुए ज्वाला स्वरूप का वायुमण्डल बनाने की सेवा करो,

उसके लिए चाहे भट्ठियां करो या आपस में संगठित होकर रूहरिहान करो लेकिन ज्वाला स्वरूप का अनुभव करो और कराओ,

इस सेवा में लग जाओ तो छोटी-छोटी बातें सहज परिवर्तन हो जायेंगी।

पिछले दो दिनों में बहुत सारे मैसेज receive हुए । जिस में सबके दिल की यही चाहना थी कि daily Highlighted murli को बंद ना किया जाए क्योंकि इससे उन्हें पुरुषार्थ में बहुत सहयोग मिलता है।
तो आप सबकी शुभ आशाओं के चलते यह निर्णय लिया है कि daily मुरली चालू ही रहेगी लेकिन साथ में अव्यक्त मुरलियों को भी highlight करना - average प्रतिदिन एक मुरली के हिसाब से चालू रखना है क्योंकि यही अब समय की पुकार है। अभी नही तो कभी नही।

अब चुकी दो मुरलियां एक साथ highlight करना अपने आप मे एक डिफिकल्ट और चुनौती पूर्ण टास्क है एवं लौकिक कार्य व्यवहार को भी संभालना है।

तो ये सोचा है की अगर कीसी कारण से किसी दिन अव्यक्त मुरली को पूरा न कर सके और target पूरा करने में पिछड़ जाते है तो उस स्थिति में छुट्टी के दिनो में उसको cover करेंगे ।

प्रति महीना 25 अव्यक्त मुरलियों को complete करने का लक्ष्य रखा है। महीने के बाकी जो 5 या 6 दिन बचेगे उसको मुरली backlog clear करने के लिए reserve रखते है।

अच्छा

प्राणों से भी प्यारे, सम्पूर्ण श्रुष्टि के पालनकर्ता मीठे ते मीठे अव्यक्त बाबा दादा की सेवा में उनका सेवक।
ॐ शांति।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

15

 Call of Time/ समय की पुकार

वर्तमान समय रूहानी दृष्टि और वृत्ति के अभ्यास की बहुत आवश्यकता है। 75 परसेन्ट इस रूहानियत के अभ्यास में कमजोर हैं। मैजारिटी किसी-न-किसी प्रकार के प्रकृति के आकर्षण के वशीभूत हो ही जाते हैं। व्यक्ति व वैभव कभी-न-कभी अपने वश कर लेता है। उसमें भी मन्सा संकल्प के चक्कर में खूब परेशान होने वाले हैं। इस परेशानी के कारण स्वयं से दिलशिकस्त भी हो जाते हैं। वास्तव में ब्राह्मण आत्मा अगर संकल्प में विकारी दृष्टि और वृत्ति रखती हैं - तो ऐसी भावना रखने वाले भी महापापी की लिस्ट में आ जाते हैं। ब्राह्मण अर्थात दिव्य-बुद्धि के वरदान वाले। दिव्य नेत्र के वरदान वाले, ऐसे दिव्य बुद्धि और दिव्य नेत्र वाले बुद्धि में संकल्प द्वारा दिव्य नेत्र में एक सेकण्ड के लिए भी नजर द्वारा इस चमड़ी को व जिस्म को टच भी नहीं कर सकते। दिव्य बुद्धि का, दिव्यनेत्र का शुद्ध आहार और व्यवहार शुद्ध संकल्प हैं। अगर अपने शुद्ध संकल्प रूपी आहार अर्थात भोजन को छोड़ अशुद्ध आहार स्वीकार करते हो अर्थात् संकल्प के वशीभूत हो जाते हैं तो ऐसे मलेच्छ भोजन वाले मलेच्छा आत्मा कहलायेंगे। अर्थात् महापापी, आत्मघाती कहलायेंगे। इसलिए इस महापाप का दण्ड बहुत वड़े रूप में भोगना पड़ेगा। इसलिए दिव्य बुद्धि और सदा शुद्ध आहारी बनो। समझा? 31/8/25

(19.09.1975)

Result

m.m.m. Imp.

महाकाल उवाच:

4.2 मर्यादा की लकीर के अन्दर ही रहो :

पूछो अपने आप से...

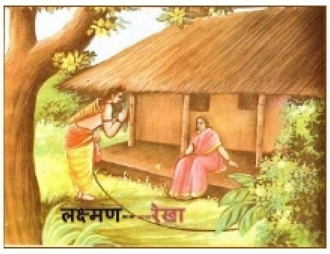

(अ) अपने को सच्ची सीता समझते हो ? सच्ची सीता अर्थात् हर कदम श्रीमत की लकीर के अन्दर। तो सदा लकीर के अन्दर रहते हो ना ? राम एक है, बाक़ी सब सीतायें हो। सीता को लकीर के अन्दर ही बैठना है। सदा बाप की याद, सदा बाप की श्रीमत — ऐसी लकीर के अन्दर रहने वाली सच्ची सीता। एक कदम भी बिना श्रीमत के नहीं। जैसे ट्रेन को पटरी पर खड़ा कर देते हैं, तो ऑटोमेटिकली रास्ते पर चलती रहती है, ऐसे ही **रोज़ अमृतवेले याद की लकीर पर खड़े हो जाओ। अमृतवेला है फाउण्डेशन। अमृतवेला ठीक है, तो सारा दिन ठीक हो जायेगा।** प्रवृत्ति में रहने वालों का विशेष अमृतवेले का फाउण्डेशन पक्का होना चाहिए, तो सारा दिन स्वत: ही सहयोग मिलता रहेगा। लौकिक प्रवृत्ति में रहते भी सदा एक बाप की सच्ची सीता बन कर रहो। सीता को सदा राम ही याद रहे। नस-नस में राम की स्मृति की आवाज़ हो। ऐसी सच्ची सीतायें हो ना ? इसी को कहा जाता है न्यारा और प्यारा। जितना न्यारे, उतना बाप के प्यारे।

समजा?

3/9/25

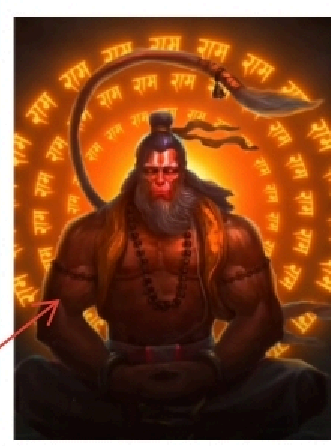

अर्जुन उवाच

अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः॥

अर्जुन बोले—हे कृष्ण! तो फिर यह मनुष्य स्वयं न चाहता हुआ भी बलात् लगाये हुएकी भाँति किससे प्रेरित होकर पापका आचरण करता है?॥ ३६॥

श्रीभगवानुवाच

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम्॥

श्रीभगवान् बोले—रजोगुणसे उत्पन्न हुआ यह काम ही क्रोध है, यह बहुत खानेवाला अर्थात् भोगोंसे कभी न अघानेवाला और बड़ा पापी है, इसको ही तू इस विषयमें वैरी जान॥ ३७॥

धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च।
यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम्॥

जिस प्रकार धूएँसे अग्नि और मैलसे दर्पण ढका जाता है तथा जिस प्रकार जेरसे गर्भ ढका रहता है, वैसे ही उस कामके द्वारा यह ज्ञान ढका रहता है॥ ३८॥

आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा।
कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणानलेन च॥

और हे अर्जुन! इस अग्निके समान कभी न पूर्ण होनेवाले कामरूप ज्ञानियोंके नित्य वैरीके द्वारा मनुष्यका ज्ञान ढका हुआ है॥ ३९॥

Enemy Forever

इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते।
एतैर्विमोहयत्येष ज्ञानमावृत्य देहिनम्॥

इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि—ये सब इसके वासस्थान कहे जाते हैं। यह काम इन मन, बुद्धि और इन्द्रियोंके द्वारा ही ज्ञानको आच्छादित करके जीवात्माको मोहित करता है॥ ४०॥

तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ।
पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम्॥

इसलिये हे अर्जुन! तू पहले इन्द्रियोंको वशमें करके इस ज्ञान और विज्ञानका नाश करनेवाले महान् पापी कामको अवश्य ही बलपूर्वक मार डाल॥ ४१॥

इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः।
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः॥

इन्द्रियोंको स्थूल शरीरसे पर यानी श्रेष्ठ, बलवान् और सूक्ष्म कहते हैं; इन इन्द्रियोंसे पर मन है, मनसे भी पर बुद्धि है और जो बुद्धिसे भी अत्यन्त पर है वह आत्मा है॥ ४२॥

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना।
जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम्॥

इस प्रकार बुद्धिसे पर अर्थात् सूक्ष्म, बलवान् और अत्यन्त श्रेष्ठ आत्माको जानकर और बुद्धिके द्वारा मनको वशमें करके हे महाबाहो! तू इस कामरूप दुर्जय शत्रुको मार डाल॥ ४३॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मयोगो नाम तृतीयोऽध्यायः॥ ३॥

Formidable Enemy

~~o~~

Biggest enemy of soul/human Being is not any person/religion, but the 'Kaam vikar' is.

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते।
सङ्गात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते॥

विषयोंका चिन्तन करनेवाले पुरुषकी उन विषयोंमें आसक्ति हो जाती है, आसक्तिसे उन विषयोंकी कामना उत्पन्न होती है और कामनामें विघ्न पड़नेसे क्रोध उत्पन्न होता है॥ ६२॥

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥

क्रोधसे अत्यन्त मूढ़भाव उत्पन्न हो जाता है, मूढ़भावसे स्मृतिमें भ्रम हो जाता है, स्मृतिमें भ्रम हो जानेसे बुद्धि अर्थात् ज्ञानशक्तिका नाश हो जाता है और बुद्धिका नाश हो जानेसे यह पुरुष अपनी स्थितिसे गिर जाता है॥ ६३॥

Soul

विषयो के चिंतन से आसक्ति
आसक्ति से कामना/काम
कामना में विघ्न पड़ने से क्रोध
क्रोध से *अत्यंत* मूढ़भाव
मूढ़भाव से स्मृतिमें भ्रम
स्मृति में भ्रम से बुद्धि अर्थात ज्ञानशक्ति का नाश
बुद्धि का नाश हो जाने से पुरुष(आत्मा) अपनी स्थिति से गिर जाता है।

गीता अध्याय 2 - श्लोक 62,63

So, ultimate Root cause as per revered "Geeta" is

Kaam vikar

link of the song → Click

तो आज आत्मा सजनी की प्यारे ते प्यारे शिव साजन जो कि हमारे गाइड/रहनुमा है उनसे अपने सच्चे दिल की रूह रीहान।
=====¥¥¥¥¥¥====¥¥¥====
From movie: Rocky handsome(2016)

Rehunma...
Tu jo mila, sab mil gaya
(ओ मेरे रहनुमा/guide...
एक तू जो मिला, मुझे सब कुछ मिल गया।
मेरी सारी की सारी स्थूल एवं सूक्ष्म ख्वाहिशे अब हो चुकी है पूरी।)

Dil ki namaazein jaake
Pahunchi falak se aage
Toh jaake paaya tujhko
Mere rehnuma...
(यूँ तो द्वापर से ले कर आपको याद किया है।
किन्तु कलियुग के अंत में जब वो ही यादों ने/नमाज ने अनहद नाद ले लिया और फलक/आसमान को पार कर के तुम तक परमधाम पहुंची - तब जाके तुझको मैंने पाया हैं।

तो अब तुम ही बताओं की एक पल भी मैं तुमको भूलूँ तो भूलूँ कैसे...?)

Mujhko mera Rabb mil gaya
(तो आखिरकार भी मुझे मेरा रब/मेरे प्राण/मेरे सर्वस्व मिल ही गये, जिसके लिए ही तो मैं द्वापर से हर एक साँस की गिनती करती थी की कब मुझे आप मिलेंगे..?)

Baahon se aage tere
Duniya nahi hai meri
Rakhle yahin tu mujhko
Mere rehnuma...
(ओ मेरे साजन, मेरे guide, मेरे रहनुमा...
अब जो मैं तुम्हारी बाँहों में हूँ।
तो तुम्हारी बाँहों से आगे मेरा कुछ भी नहीं है अर्थात तुझमे ही मेरी दुनिया हैं।

तो बस, मुझे यहीं पर तुम्हारी बाँहों में रख लो।
मुझे कुछ भी नहीं चाहिए आपके अलावा।
सतयुग का सर्वोच्च विश्व महाराजन का पद भी नहीं।)

===&&&&&&=====
Jo naa bhaaye, teri nazar ko
Dekhungi naa main phir woh nazara
(ओ मेरे आसमान, मेरी जमीन, मेरे साजन, मेरे सर्वस्व...

आपकी नजर को जो न भाये (आपकी श्रीमत के अलावा), उस नज़ारे को मैं फिर संकल्प में भी नहीं देखूंगी।
अर्थात आपकी श्रीमत को मैं संकल्प मात्र भी नहीं तोड़ूँगी।)

Tu jo mile toh, chhod doon khud ko
(अगर अभी तुम कहते हो की सारी की सारी दुनिया को छोड़कर, आ जाओं और मुझमे समा जाओं।

तो इस ही पल...
इस स्थूल शरीर समेत सारी की सारी दुनिया को छोड़कर तुझमे समा जाऊँ।)

Tujhme kahin hai mera kinaara
Bas tu hi tu mujhe yaad hai
(क्योंकि, इस अफाट विषय सागर में भटकती मुज आत्मा रूपी नैया का तुझमे ही तो कहीं मेरा किनारा हैं।
तो अब तुम ही बताओं की मैं तुम्हे छोड़ कर जाऊँ तो जाऊँ कहाँ..?

इस ही लिए,
बस...
हर एक पल तू ही तू मुझे याद हैं।)

Dil ki namaazein jaake
Pahunchi falak se aage
Toh jaake paaya tujhko
Mere rehnuma...

=====¥¥¥¥¥=======
Guzri hoon jab se, main tere dar se
Hasne lagi hoon, khul ke main rehbar
(ओ मेरे रेहबर, मेरे साथी, मेरे हमदम...

जब से मैं तेरे दर से गुजरी हूँ अर्थात तुम से मिली हूँ।

तब से, ऐसी तो खुल के हँसने लगी हूँ की जो भी मुझसे मिलता है वो यही पूछता है की आपको मिला क्या है ....?
जो आप इतनी कापरी खुशी में रहते हो।)

Dard se tere rista juda toh
Ab muskuraate hai mere manjar
(साथ ही, जब से तुम्हारे दर्द से मेरा रिश्ता जुडा है अर्थात जो आप कहते हो की...

"बाप बच्चों के दु:ख की पुकार देख नहीं सकते, सुन नहीं सकते...etc" Click

तो ये सारे के सारे आपके दर्द को दूर करना,जब से मैंने अपनी responsibility समज ली है - तब से मेरे सारे मंजर/नज़ारे मुस्कुराने लगे हैं।)

Haan.. Rabb ki mujhe saugaat hai
(तो अब क्या कहूँ मैं तुमको पा के...
मेरे पास कोई भी अल्फ़ाज़ नहीं है।
बस मैं तो इतना ही कहूँगी की....
उस रब/drama की एक प्यारी से प्यारी और एक मात्र - जो मुझे द्वापर से चाहिए थी वो सौगात हो तुम।)

Dil ki namaazein jaake
Pahunchi falak se aage
Toh jaake paaya tujhko
Mere rehnuma...

Baahon se aage tere
Duniya nahi hai meri
Rakhle yahin tu mujhko
Mere rehnuma...

Other Movie Song to submerge
in the love of supreme
↓
Click